अध्याय-2

ग्रामीण जीवन-यापन के स्वरूप

1. आपके घर में उपयोग होने वाले खाद्य–सामग्री किन माध्यमों से प्राप्त होती है?

खाली स्थानों में हाँ या नहीं भरें–

खाद्य सामग्री	खेत से	बाजार से	मजदूरी रूप में	अन्य स्रोत से
गेहूँ				
मक्का				
चावल				
दाल				
तेल				
नमक				
गन्ना				
मूंगफली				
चना				
दूध				

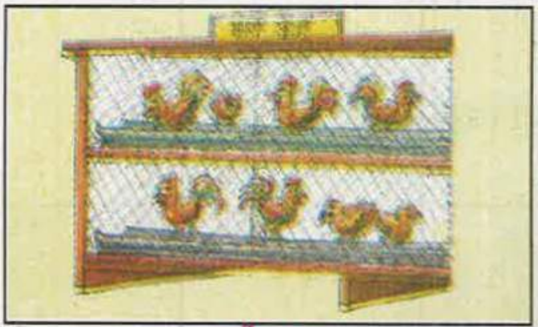

मुर्गी पालन

चाय,नास्ते की दुकान

आपने समाज में मौजूद अनेक तरह की विविधताओं के विषय में जाना। भारत गाँवों का देश है। यहाँ लगभग छः लाख से भी अधिक गाँव है। यदि आप अपने आस–पड़ोस पर नजर डालें तो पायेंगे कि लोगों के जीवन–यापन संबंधी कार्यों में भिन्नता पाई जाती है। इस पाठ में हम देखेंगे कि लोगों के पास जीवन–यापन के समान अवसर है या नहीं। साथ ही यह भी जानेंगे कि ग्रामीण जीवन–यापन की स्थितियाँ एक–दूसरे से कितनी मिलती हैं या अलग हैं? उन्हें किन–किन समस्याओं का सामना करना पड़ता है?

बिहार के बक्सर जिले में राजपुर गाँव है। गाँव की मुख्य गली तथा सड़क बाजार की तरह दिखता है। वहाँ पर आपको तरह–तरह की छोटी–बड़ी दुकाने दिखेंगी। चाय–नाश्ता की दुकान के बगल में एक परिवार रहता है, जो अपने घर में ही लोहे की चीजें बनाने का काम करता है। उसके नजदीक हीं साइकिल मरम्मत की दुकान है। गाँव में कुछ परिवार कपड़े धोकर अपनी आजीविका चलाते हैं। ज्यादातर परिवार खेती से अपनी आजीविका चलाते हैं। यहाँ मुख्य रूप से गेहूँ, चना, अरहर, मसूर की खेती होती है।

इसके अतिरिक्त यहाँ पर आम और अन्य मौसमी फलों के बगीचे भी हैं। जीवन–यापन के लिए लोग बागवानी करते हैं तथा प्राप्त फलों को बाजार में बेचकर कुछ आय प्राप्त करते हैं। आजीविका के लिए यहाँ के लोग मछली–पालन, मुर्गी–पालन, मधुमक्खी–पालन और बकरी व सूअर भी पालते हैं। दुग्ध उत्पादन के लिए पशुओं को भी पालते हैं।

आइए ग्रामीण परिवेश में जीवन–यापन कर रहे लोगों से मिलें और देखें कि हम आजीविका के बारे में क्या सीख सकते हैं?

नीचे दिये गये खाली स्थानों में अपने क्षेत्र के अनुसार आजीविका संबंधित किये जाने वाले कार्यों की सूची तैयार करें।

कृषि कार्य के अंतर्गत	गैर कृषि कार्य के अंतर्गत	अन्य कार्य
गेहूँ, चना, अरहर	बागवानी, डेयरी, मछली	शिक्षक, डॉक्टर, दुकानदार
मसूर, धान, ...,	पालन, मुर्गी पालन, ...,	................, ...,
................, ...,	सूअर पालन, ...	................, ...,
........, ...,	................, ...,	................, ...,

खेती, किसान और मजदूर

ललन– एक मध्यम किसान

मध्यम किसान

एक दिन हम शुकुलपुरा गाँव गए। राजपुर की तरह शुकुलपुरा भी मैदानी गाँव है। लेकिन यहाँ के गाँवों में अधिकतर नहरों से सिंचाई होती है। जब शुकुलपुरा पहुँचे तो गेहूँ की कटाई का मौसम शुरू हो चुका था। हमें देखते ही ललन प्रसन्न होकर बोला आओ पानी पीयो, काफी दिन बाद इधर आना हुआ। ललन से हमारी अच्छी पहचान थी। हम उसके खेत की ओर चल दिये। खेत की मेंड़ पर चलते हुए हम खेत में लगे फसलों को भी देख रहे थे। गेहूँ के साथ ही अन्य फसल भी घने और अच्छे लग रहे थे। ललन ने बताया कि इस बार अच्छी फसल की उम्मीद है। फसल के लिए इस बार समय पर खाद–बीज के लिए पैसे का प्रबन्ध हो गया था। पैसा के.सी.सी. (किसान क्रेडिट कार्ड) के माध्यम से मिल गया था और वर्षा व नहर से सिंचाई भी समय पर हो गया था। दवा–कीटनाशक के प्रयोग के कारण फसल घनी व अच्छी हुई है।

ललन के पास 5 एकड़ जमीन है। वह साल में दो फसलों को उपजाता है। बरसात के समय धान एवं ठण्ढ में गेहूँ–चने व दलहनी फसलें उपजाता है। सिंचाई और रासायनिक खाद से उपज काफी बढ़ गयी है।

ललन, उसकी पत्नी और तीन बच्चे खेत पर काम कर रहे थे। उनके अलावा कुछ मजदूर भी थे। ललन पानी पिलाने के बाद पूछा, कहिए आज कैसे आना हुआ? हमने कहा – आपसे मिलने आए थे, आपका काम कैसा चल रहा है?

ललन बोला अभी तो कटाई ही पूरी नहीं हुई है। कटनी के बाद किराए के थ्रेसर मशीन से दवनी करानी पड़ेगी।

मजदूरों की कमी के कारण काम समय पर नहीं हो रहा है और बेचने भी तुरन्त जाना है। बुआई, निराई–गुड़ाई के समय ललन जैसे मध्यम किसानों को मजदूरों की जरूरत नहीं पड़ती है। परन्तु कटाई के समय वह कुछ मजदूरों की मदद लेता है। कटाई के समय मजदूरी भी बढ़ जाती है जिससे उसके जैसे किसान को जरूरत से कम आदमी से काम चलाना पड़ता है। खेती के साथ वह मुर्गी फार्म भी चलाता है–जिससे होने वाली आय से दैनिक खर्चों को पूरा करने का प्रयास करता है।

ललन को बैंक का कर्ज चुकाने के लिए फसल जल्दी बेचनी है, क्योंकि कर्ज नहीं लौटाने पर पुनः कर्ज मिलने में परेशानी होगी। ललन जैसे लोगों को थोड़ी सी जमीन होती है। इसमें उनके परिवार का गुजारा हो जाता है। उन्हें किसी के यहाँ मजदूरी नहीं करनी पड़ती, परन्तु उनके पास इतने पैसे भी नहीं होते कि खाद–बीज–कीटनाशक आदि समय पर खरीद सके। हमने ललन से जाने के लिए आज्ञा माँगी, क्योंकि हमें गाँव के अन्य लोगों से भी मिलना था।

प्रश्न –

1. एक मध्यम किसान परिवार को आमतौर पर आजीविका चलाने हेतु कितनी भूमि की आवश्यकता होती है, शिक्षक के साथ चर्चा करें।
2. मध्यम किसान दूसरे के खेतों में काम क्यों नहीं करते हैं?
3. ललन की पारिवारिक आय में वृद्धि होने के अन्य तीन स्रोत बताएँ।

कृपाशंकर

एक सीमान्त किसान

सीमान्त किसान

ललन के घर के पास में ही कृपाशंकर का भी घर है। अतः वह हमें रास्ते में ही मिल गया। वह अपनी फसल बेचकर लौट रहा था। हमें वह अपने घर ले गया। हमने कृपाशंकर से पूछा आपने अपनी फसल इतनी जल्दी क्यों बेच दी? कोई बात थी क्या? अभी तो बाजार भी सस्ता है। अभी बेचने पर दाम कम मिला होगा ।

कृपाशंकर कुछ देर चुप रहा, फिर गहरी सांस लेते हुए बोला–मुझे नगद पैसों की जरूरत है, खेती से साल भर का खर्च नहीं चल पाता। घरेलू खर्च के लिए कर्ज लिया था, उसको देना है, साथ ही अन्य कर्ज भी चुकाना है।

कृपाशंकर के पास 1 एकड़ जमीन है। उसके पास खेती करने के लिए आधुनिक उपकरण नहीं है। उसे अपनी 1 एकड़ जमीन जोतने के लिए खाद, बीज और कीटनाशक सब कुछ उधार लेना पड़ता है। नहरों से सिंचाई तथा समय पर बारिश होने के कारण वह दो फसल उपजाता है। पर उधार चुकाने के लिए वह अपनी फसल जल्दी बेच देता है। पैसे की कमी के कारण वह भाव बढ़ने का इंतजार नहीं कर सकता। खेतों से गुजरते हुए हमने पूछा, 'इस साल तुम्हारी फसल कैसे हुई है?'

कृपाशंकर ने कहा, "इस साल फसल कम हुआ है, क्योंकि जितने पैसे चाहिए थे उतने का कर्ज नहीं मिल पाया। मेरे 1 एकड़ जमीन में केवल चार क्विंटल ही गेहूँ हुआ है।"

कृपाशंकर जैसे छोटे सीमान्त किसानों को आसानी से कर्ज नहीं मिल पाता है। उन्हें कई बार महाजन या साहूकार से ऊँची ब्याज पर कर्ज लेना पड़ता है। इस कारण फसल कटते ही उसे बेचकर ब्याज समेत लिए गये कर्ज की रकम को लौटाने की जल्दी होती है। अगर समय पर कर्ज की रकम वापस न की गई तो अत्यधिक ब्याज के कारण कर्ज की रकम

को वापस कर पाना संभव नहीं होता। उनके पास जमीन कम होती है। इसलिए आमदनी वैसे ही कम रहती है। ऐसी स्थिति के कारण सीमान्त किसान खेती के नये–नये तरीकों का उपयोग नहीं कर पाते।

कृपाशंकर की परेशानियों को हम समझ रहे थे। हमने उससे पूछा – अब तुम क्या करोगे? साल भर का गुजारा कैसे होगा?

कृपाशंकर बोला हम लोग प्रमोद के चावल मिल पर बाकी समय काम करते हैं। आसपास के गाँवों से चावल खरीदने में मदद करते हैं।

कृपाशंकर के पास दो गाय व एक भैंस भी है जिसका दूध वह दुकानदारों एवं सहकारी समिति में बेचता है। जिससे कुछ आय प्राप्त हो जाता है।

प्रश्न –

1. **सीमान्त किसान कृषि कार्य के अलावे कौन–कौन से कार्य करते हैं, सूची बनाये।**
2. **कृपाशंकर जैसे किसानों को खाद–बीज के लिये कर्ज कहाँ–कहाँ से मिलता है? इस कर्ज को कब और कैसे वापस करना होता है?**
3. **कृपाशंकर को डेयरी में दूध बेचने से कितनी आय प्राप्त होती होगी? अनुमान लगाएँ।**
4. **मध्यम किसान और कृपाशंकर के काम में क्या अन्तर है?**

कृपाशंकर सीमान्त किसान है, उन्हें अपनी जमीन से साल भर खाने के लिए अनाज नहीं हो पाता। उन्हें दूसरे के खेतों में भी खेती करना पड़ता है। खेती और घर के खर्चे के लिये उन्हें समय–समय पर कर्ज भी लेना पड़ता है।

प्रमोद

एक बड़ा किसान

प्रमोद शुकुलपुरा गाँव का एक और किसान है। उसके पास खेती के लिए लगभग 15 एकड़ जमीन है। जमीन पूरी तरह सिंचित भी है। इस गाँव में उससे भी बड़े किसान है जिनके पास 30–40 एकड़ तक की जमीन हैं। उन्हें खेतों से बड़ी मात्रा में उपज मिल जाती है। जब हम प्रमोद से मिले तो वह अपने घर के बाहर खड़े मजदूरों से अपनी ट्रैक्टर–ट्राली से गेहूँ उतरवा कर घर में रखवा रहा था।

नमस्कार! कहते हुए हमने उससे पूछा – आप गेहूँ अन्दर रखवा रहे हैं। अभी नहीं बेचना है क्या?

प्रमोद बोला अभी बेचकर क्या होगा? भाव बहुत गिरा हुआ है। जब कुछ समय बाद भाव बढ़ जायेगा तब बेचा जायेगा। पुनः वह बोला – आप तो जानते ही हैं, इस समय गेहूँ कटाई का मौसम है, इस समय बाजार में अत्यधिक मात्रा में फसल आ जाती है। इससे भाव कम मिलता है।

प्रमोद को अभी पैसों की जरूरत नहीं है, साथ ही उसके पास फसल को रखने के लिए घर भी है। इस कारण वह भाव बढ़ने का इन्तजार कर रहा था।

प्रमोद ने हमें चाय–नाश्ता के लिए कहा। चाय के साथ–साथ ही प्रमोद ने बताया कि मैंने बैंक से लोन लेकर मोटरपंप, थ्रेसर और ट्रैक्टर–ट्राली जैसी कई चीजें खरीदी हैं और इसका लोन भी निश्चित समय पर चुका दिया है। इन मशीनों के कारण खेती आसान हो गई और

ट्रैक्टर, थ्रेसर मशीन एवं हार्वेस्टर

मजदूरी की काफी बचत हुई है। जिससे पहले की तुलना में बचत थोड़ी और बढ़ गई। अब बचे पैसों से जमीन खरीदने की सोच रहा हूँ।

हम जब प्रमोद के यहाँ से चले तो उसके जैसे बड़े किसानों के बारे में सोचने लगे। अपने खेतों की कमाई से उसके परिवार का गुजारा अच्छी तरह हो जाता है। वह खेती के लिए जरूरी सभी चीजों खाद, बीज, दवा में कोई कमी नहीं होने देता है। इन सब चीजों के लिए उसे उधार (कर्ज) भी नहीं लेना पड़ता है। खेती की कमाई से इतना फायदा हो जाता है कि वह नई जमीन खरीदने से लेकर खेती में उपयोग आने वाले अन्य उपकरण खरीदने की सोच पाते हैं।

वे सभी कामों के लिए मजदूर रख लेते हैं। उनको और उनके परिवार के अन्य सदस्यों को अपने खेतों पर काम करने की जरूरत नहीं होती। बड़े किसान अपने पास एक या दो मजदूर साल भर के लिए रखते हैं। इन्हें 'हलवाहा' कहते हैं।

प्रमोद जैसे अन्य बड़े किसान खेती के साथ ही चावल के मिल भी चलाते हैं। मिल का चावल शहर के बड़े व्यापारियों को बेचते हैं। जिससे उन्हें अच्छी कमाई हो जाती है। वह अपने खेतों में बागवानी भी करता है।

प्रश्न –

1. सीमान्त किसान, मध्यम किसान, बड़ा किसान जरूरत पड़ने पर कर्ज कहाँ से लेते हैं?
2. आप अपने अनुभव से बताइए कि आप के यहाँ जोतदार किसान खेती के अलावे क्या–क्या करते हैं?
3. एक बड़े किसान और सीमान्त किसान के खेती के कार्य के तरीकों में क्या अन्तर है?
4. एक बड़े किसान उत्पादित अनाज को क्या करते हैं, शिक्षक के साथ चर्चा करें।

संतोष

एक कृषक–मजदूर

कृषक मजदूर

खेती का काम नहीं रहने पर ईंट भट्ठे पर काम करते मजदूर

शुकुलपुरा के सभी मजदूर काम में लगे हुए थे। हम एक खेत पर पहुँचे जहाँ गेहूँ की कटाई चल रही थी। गेहूँ की कटाई के समय अधिक मजदूरों की आवश्यकता होती है। कटाई तुरन्त नहीं होने पर गेहूँ टूट कर खेतों में गिरने का डर रहता है। वहाँ हमने देखा कि संतोष और उसके जैसे अन्य मजदूर जमीन पर बैठ कर भोजन कर रहे थे। संतोष जैसे मजदूर परिवार जिनके पास बिल्कुल जमीन नहीं होती है, कृषक–मजदूर कहलाते हैं। ये अपने खेतों से नहीं बल्कि पूरी तरह दूसरे के खेतों पर जीवन–यापन करते हैं। हमने संतोष से काम के बारे में पूछा कि, अब सिंचाई और फसल की अच्छी स्थिति से काम मिल जाता होगा?

संतोष ने निराशाजनक भाव से कहा फसलों की कटाई के समय काम आसानी से मिल जाता है परन्तु साल के बाकी दिनों में हमें मजदूरी कहाँ मिल पाती है? हाँ! बुआई और कटनी के समय अधिक काम मिलता है और बाद में नहीं के बराबर। गाँव में मजदूरी नहीं मिलने पर संतोष, पत्नी और बच्चों के साथ पास के शहर में मिट्टी ढोने, बालू ढोने

काम की तलाश में गाँव से शहर पहुँचे मजदूर

पशुपालन

तथा निर्माणाधीन मकानों में मजदूरी का काम करता है। संतोष की पत्नी दूसरों के घरों में भी काम करती है। वे लोग गाय तथा भैंस को भी पालते हैं। पिछले वर्ष उसका लड़का जब बीमार हो गया था तो शहर में चिकित्सा कराने के लिए उसने कर्ज लिया था। कर्ज चुकाने के लिए उसने अपनी भैंस को बेच दिया था। कुछ परिवारों को काम नहीं मिलने के कारण दूसरे प्रांतों में जाना पड़ता है। ग्रामीण परिवारों में बहुत कृषक मजदूर ऐसे हैं जो थोड़ा पैसा कमाते हैं, जिससे उनका गुज़ारा नहीं होता है। इस कारण वे गैरकृषि–कार्य (टोकरी, मिट्टी के बर्तन, ईंट, झाड़ू, सूप, पंखा, चटाई आदि बना) कर अपना जीवन–यापन करते हैं।

प्रश्न –

1. कृषक मजदूर एवं सीमान्त किसान में क्या समानता और अंतर है?
2. आमतौर पर कृषक मजदूर को कर्ज कहाँ से और कैसे प्राप्त होती है?
3. पशुपालन का क्या कारण है?
4. कृषक मजदूरों को किन–किन महीनों में काम नहीं मिलता है? अपने कक्षा के चार–पाँच सहपाठियों की टोली बनाकर सर्वेक्षण कीजिये।

गैरकृषि—कार्य

हस्तशिल्प

हस्तशिल्प

सिलाई का काम

जरी—गोटा लगाने का काम

अभी तक आप ने देखा कि ग्रामीण क्षेत्रों में लोग कैसे जीवन—यापन करते हैं और आजीविका के लिए कितना कमा पाते हैं, यह इस बात पर निर्भर करता है कि वे जिस जमीन को जोतते हैं वह कैसी है। कई लोग उस जमीन पर कृषक मजदूर के रूप में निर्भर हैं। ज्यादातर

बढ़ई

लोहार

किसान अपनी जरूरतों को पूरा करने और बाजार में बेचने के लिए भी फसलें उगाते हैं। कुछ किसानों को अपनी फसल उन व्यापारियों को बेचनी पड़ती है जिससे वे रुपये उधार लेते हैं। इसी तरह गुजर–बसर करने के लिए ग्रामीण क्षेत्रों में कुछ परिवार ऐसे हैं जो कारीगर के रूप में (बढ़ईगिरी, लोहारगिरी, राजमिस्त्री, दर्जी, मिट्टी के बर्तन, खिलौना, दीया, ईंट, टोकरी, सूप, दौरी, पंखा आदि बनाकर) आजीविका चलाते हैं। इन हस्त निर्मित सामानों को गाँवों में ही बेचकर अपने परिवार का जीवन–यापन करते हैं। गाँवों में कुछ परिवार हाथ से कम्बल, लोई, चादर व कपड़ों पर जरी एवं गोटा लगाने का भी काम करते हैं। साइकिल मरम्मत की दुकान, राशन की दुकान और अनाज का व्यापार करने के अलावे इन ग्रामीण–क्षेत्रों के लोग जीवन–यापन के लिए शिक्षक, कर्मचारी, आंगनवाड़ी सेविका, डॉक्टर, नर्स, डाकिया के रूप में भी कार्य करते हैं।

अभ्यास

1. **आपके गाँव में किन–किन फसलों की खेती की जाती है? सूची बनाए।**
2. **मध्यम किसान खेती के लिए किन–किन माध्यमों से पैसा प्राप्त करते हैं?**
3. **आमतौर पर आपके गाँव में एक किसान परिवार को खेती से गुजारा करने के लिये कितनी एकड़ जमीन की आवश्यकता होती है, जिससे उन्हें या उनके परिवार के सदस्यों को दूसरे के यहाँ मजदूरी नहीं करनी पड़े?**

4. महाजन या साहूकार के यहाँ कर्ज की ब्याज दर ऊँची क्यों होती है?
5. एक व्यक्ति को अमूमन एक वर्ष में कितने समय कृषक मजदूर के रूप में काम मिलता है एवं बाकी दिनों में वह आजीविका संबंधी कौन–कौन सा कार्य करते हैं?
6. संतोष और प्रमोद के परिवारों में क्या अंतर है?
7. गैरकृषि–कार्य के अन्तर्गत आपके गाँव के लोग कौन–कौन से कार्य करते हैं?
8. गैरकृषि–कार्य किसे कहते हैं? उदाहरण सहित उत्तर दें।
9. आप बड़ा होकर जीवन–यापन संबंधी कौन से कार्य करना चाहते हैं और क्यों?
10. आपने पाठ में अलग–अलग किसानों के बारे में जाना। खाली स्थानों पर उनकी स्थितियों के बारे में भरें।

किसान का नाम	स्थिति	भूमि	कर्ज की प्राप्ति	फसलों को बेचना	खेती के अलावा अन्य कार्य
ललन			बैंक से		मुर्गी पालन
कृपाशंकर		एक एकड़			
प्रमोद				भाव बढ़ने पर बेचता है।	
संतोष	कृषक मजदूर				

तंबाकू सेवन करने वाले व्यक्ति तंबाकू सेवन नहीं करने वाले व्यक्तियों से 10 वर्ष अधिक बड़े होने का अनुभव करते हैं और उनसे 10 वर्ष पहले मरते हैं।

सिगरेट में 4 हजार रासायनिक तत्व, 200 ज्ञात विष और 60 कैंसर पैदा करने वाले एजेंट होते हैं।